सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand

सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand

विषय – सूची

	अध्याय I **प्रारंभिक**	
1.1	संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ	1
1.2	परिभाषाएं	2-3
	अध्याय II **प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि**	
2.1	अधिनियम की पृष्ठभूमि	4
2.2	धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध	4
2.3	आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां	4-5
	अध्याय III **संरक्षित संस्मारक - सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड का स्थान और अवस्थिति**	
3.1	संस्मारक का स्थान और अवस्थिति	6
3.2	संस्मारक की संरक्षित सीमा	6
	3.2.1 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अभिलेख के अधिसूचना मानचित्र/योजना	6
3.3	संस्मारक का इतिहास	7
3.4	संस्मारक का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएँ, तत्व, सामग्री, आदि)	7
3.5	वर्तमान स्थिति	7
	3.5.1 संस्मारक की स्थिति-स्थिति का आकलन	7
	3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या	7
	अध्याय IV **स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में मौजूदा ज़ोनिंग, यदि कोई हो**	
4.1	मौजूदा ज़ोनिंग	8
4.2	स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश	8
	अध्याय V **प्रथम अनुसूची एवं सर्वेक्षण योजना के अनुसार सूचना**	
5.1	संस्मारक की सर्वेक्षण योजना	9
5.2	सर्वेक्षित आंकड़ो का विश्लेषण	9
	5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण	9
	5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण	9

	5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण	9-10
	5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि	10
	5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊंचाई (क्षेत्र-वार)	10
	5.2.6 राज्य संरक्षित संस्मारक और सूचीबद्ध धरोहर भवन, यदि उपलब्ध हों	10
	5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं	10
	5.2.8 संस्मारक तक पहुंच	10
	5.2.9 अवसरंचनात्मक सेवाएं	10
	5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित ज़ोनिंग	11
अध्याय VI संस्मारक का वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व		
6.1	संस्मारक का वास्तुकला, छवि-चित्रण, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व	12
6.2	संस्मारक की संवेदनशीलता (अर्थात विकासात्मक दबाव, शहरीकरण, जनसंख्या दबाव, आदि)	12
6.3	संरक्षित संस्मारक या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता	12
6.4	पहचान किया जाने वाला भूमि उपयोग	12
6.5	संरक्षित संस्मारक के अलावा अन्य पुरातात्विक धरोहर	12
6.6	सांस्कृतिक परिदृश्य	12
6.7	महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य	12
6.8	खुली जगह और निर्माण का उपयोग	13
6.9	पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ	13
6.10	संस्मारक और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज	13
6.11	पारंपरिक वास्तुकला	13
6.12	स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा यथा उपलब्ध विकास योजना	13
6.13	अनुमेय भवन संबंधी मापदंड	13
	6.13.1 मरम्मत एवं नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में)	13-14
	6.13.2 पुनर्निर्माण	14
	6.13.3 नया निर्माण	14-17
6.14	आगंतुक सुविधाएं और प्रसाधन	17
अध्याय VII स्थल विशिष्ट सिफारिशें		
7.1	स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें	18
7.2	अन्य सिफ़ारिशें	18

CONTENTS

CHAPTER I PRELIMINARY		
1.1	Short title, Extent and Commencements	19
1.2	Definitions	20-21
CHAPTER II Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended		
2.1	Background of the Act	22
2.2	Provision of the Act related to Heritage Bye-Laws	22
2.3	Rights and Responsibilities of Applicant	22-23
CHAPTER III Location and Setting of Protected Monument - A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District Almora, Uttarakhand		
3.1	Location and Setting of the Monument	24
3.2	Protected Boundary of the Monument	24
	3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records	24
3.3	History of the Monument	25
3.4	Description of the Monument (architectural features, elements, materials etc.)	25
3.5	Current Status	25
	3.5.1 Condition of the Monument - condition assessment	25
	3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers	25
CHAPTER IV Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans		
4.1	Existing Zoning	26
4.2	Existing Guidelines of the local bodies	26
CHAPTER V Information as per First Schedule and Survey Plan		
5.1	Survey Plan of the Monument	27
5.2	Analysis of surveyed data	27
	5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details	27
	5.2.2 Description of built up area	27
	5.2.3 Description of green/open spaces	27-28
	5.2.4 Area covered under circulation- roads, footpaths etc	28
	5.2.5 Heights of buildings (Zone wise)	28
	5.2.6 State Protected Monuments and listed Heritage Buildings	28

	5.2.7 Public amenities	28
	5.2.8 Access to Monument	28
	5.2.9 Infrastructure services	28
	5.2.10 Proposed zoning of the area as per Local Bodies	29
CHAPTER VI Architectural, Historical and Archaeological Value of the Monument		
6.1	Architectural, historical and archaeological value	30
6.2	Sensitivity of the Monument	30
6.3	Visibility from the Protected Monument or area and visibility from Regulated Area	30
6.4	Land-use to be identified	30
6.5	Archaeological heritage remains other than Protected Monument	30
6.6	Cultural landscapes	30
6.7	Significant natural landscapes	30
6.8	Usage of open space and constructions	31
6.9	Traditional, historical and cultural activities	31
6.10	Skyline as visible from the monument and from Regulated Areas	31
6.11	Traditional architecture	31
6.12	Developmental plan, as available, by the local authorities	31
6.13	Permissible Building related parameters	31
	6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated Area)	31
	6.13.2 Reconstruction	32
	6.13.3 New Construction	32-34
6.14	Visitor facilities and amenities	35
CHAPTER VII Site Specific Recommendations		
7.1	Site Specific Recommendations	36
7.2	Other Recommendations	36

Annexure		
अनुलग्नक-I Annexure-I	सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड की सर्वेक्षण योजना Survey Plan of - A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand	37
अनुलग्नक-II Annexure-II	संस्मारक की अधिसूचना Notification of the Monument	38-40
अनुलग्नक–III Annexure-III	सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड का अभिलेखीय सर्वेक्षण योजना मानचित्र Archival Site Plan of A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand	41
अनुलग्नक–IV Annexure-IV	सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड का राजस्व मानचित्र Revenue Map of A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand	42
अनुलग्नक–V Annexure-V	संस्मारक और उसके आसपास के क्षेत्र के चित्र Images of the Monument and the surrounding area	43-48

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधि विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम (22) के साथ पठित प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, संरक्षित संस्मारक - **"सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला-अल्मोड़ा, उत्तराखंड"** के लिए निम्नलिखित धरोहर उप-विधि जिन्हें स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग, डीआईटी यूनिवर्सिटी, देहरादून के परामर्श से सक्षम प्राधिकारी द्वारा तैयार किया गया है, को राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें और कार्य प्रणाली), नियम, 2011 के नियम 18 के उप-नियम 2 द्वारा यथा अपेक्षित जनता से आपत्ति या सुझाव आमंत्रित करने के लिए एतद्वारा 23.06.2023 को प्रकाशित किया गया था।

यथा विनिर्दिष्ट दिनांक से पहले प्राप्त आपत्ति/सुझावों पर सक्षम प्राधिकारी के परामर्श से राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण द्वारा विधिवत विचार किया गया है।

इसलिए, अब प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ की उप-धारा (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण, निम्नलिखित उप-विधि बनाता है, नामत:

"सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड" के लिए धरोहर उप-विधि

अध्याय I
प्रारंभिक

1.1 संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ:

(i) इन उप-विधियों को संरक्षित संस्मारक – **"सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड"** के लिए राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण धरोहर उप-विधि, 2025 कहा जाएगा।

(ii) ये संस्मारक के सम्पूर्ण प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र तक लागू होंगी।

(iii) इन उप-विधियों के प्रावधान किसी भी अन्य उप-विधि में निहित असंगतता के बावजूद प्रभावी होंगे, चाहे इन उप-विधियों के प्रारंभ होने से पहले या बाद में बनाए गए हों, या किसी उप-विधि के आधार पर प्रभावी होने वाले किसी भी दस्तावेज़ में हों। इन उप-विधियों को किसी अन्य उप-विधि के अनुरूप बनाने के लिए इनमें संशोधन करना अनिवार्य नहीं होगा।

(iv) ये अधिकारिक राजपत्र में उनके प्रकाशन की तिथि से प्रवृत्त होंगी।

1.2 परिभाषाएं:-

1. इन उप-विधियों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों के तहत दिए अनुसार परिभाषाएं सुविधा की दृष्टि से यहां पुन: लिखी गई हैं:-

(क) "प्राचीन संस्मारक" से कोई संरचना, रचना या संस्मारक, या कोई स्तूप या स्थान या दफ़नगाह या कोई गुफा, शैल-मूर्ति, शिला-लेख या एकाश्मक जो ऐतिहासिक, पुरातत्वीय या कलात्मक रुचि का है और जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, अभिप्रेत है, और इसके अंतर्गत हैं -

(i) किसी प्राचीन संस्मारक के अवशेष,

(ii) किसी प्राचीन संस्मारक का स्थल,

(iii)किसी प्राचीन संस्मारक के स्थल से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो ऐसे संस्मारक को बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

(iv)किसी प्राचीन संस्मारक तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

(ख) "पुरातत्वीय स्थल और अवशेष" से कोई ऐसा क्षेत्र अभिप्रेत है, जिसमें ऐतिहासिक या पुरातत्वीय महत्व के ऐसे भग्नावशेष या अवशेष हैं या जिनके होने का युक्तियुक्त रूप से विश्वास किया जाता है, जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, और इनके अंतर्गत हैं-

(i) उस क्षेत्र से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो उसे बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

(ii) उस क्षेत्र तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

(ग) "अधिनियम" से आशय प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, है;

(घ) "पुरातत्व अधिकारी" से भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का कोई ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद् से निम्नतर पद (श्रेणी) का नहीं है;

(ड.) ''प्राधिकरण'' से अधिनियम की धारा 20च के अधीन गठित राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(च) "सक्षम प्राधिकारी" से केंद्र सरकार या राज्य सरकार के पुरातत्व निदेशक या पुरातत्व आयुक्त की श्रेणी से नीचे न हो या समतुल्य श्रेणी का ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के अधीन कृत्यों का पालन करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, सक्षम प्राधिकारी के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया हो:

बशर्ते कि केंद्र सरकार सरकारी राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, धारा 20ग, 20घ और 20ङ के प्रयोजन के लिए भिन्न भिन्न सक्षम प्राधिकारी विनिर्दिष्ट कर सकेगी;

(छ) ''निर्माण'' से किसी संरचना या भवन का कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसके अंतर्गत उसमें ऊर्ध्वाकार या क्षैतिजीय कोई परिवर्धन या विस्तारण भी है, किन्तु इसके अंतर्गत किसी विद्यमान संरचना या भवन का कोई पुन:निर्माण, मरम्मत और नवीकरण या नालियों और जलनिकास सुविधाओं तथा सार्वजनिक शौचालयों, मूत्रालयों और इसी प्रकार की सुविधाओं का निर्माण, अनुरक्षण और सफाई या जनता के लिए जलापूर्ति की व्यवस्था करने के लिए आशयित सुविधाओं का निर्माण और अनुरक्षण या जनता के लिए विद्युत की आपूर्ति और वितरण के लिए निर्माण या अनुरक्षण, विस्तारण, प्रबंध या जनता के लिये इसी प्रकार की सुविधाओं के लिए व्यवस्था शामिल नहीं हैं;

(ज) "सरकार" से आशय भारत सरकार से है;

(झ) अपने व्याकरणिक रूपों और सजातीय पदों सहित "अनुरक्षण" के अंतर्गत हैं किसी संरक्षित संस्मारक को बाड़ से घेरना, उसे आच्छादित करना, उसकी मरम्मत करना, उसका पुनरूद्धार करना और उसकी सफाई करना, और कोई ऐसा कार्य करना जो किसी संरक्षित संस्मारक के परिरक्षण या उस तक सुविधाजनक पहुंच को सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक है;

(ञ) "स्वामी" के अंतर्गत हैं-

(i) संयुक्त स्वामी जिसमें अपनी ओर से तथा अन्य संयुक्त स्वामियों की ओर से प्रबंध करने की शक्तियॉ निहित हैं और किसी ऐसे स्वामी के हक-उत्तराधिकारी, तथा

(ii) प्रबंध करने की शक्तियों का प्रयोग करने वाला कोई प्रबंधक या न्यासी और ऐसे किसी प्रबंधक या न्यासी का पद में उत्तराधिकारी;

(ट) "विहित" से इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियम अभिप्रेत है:

(ठ) "प्रतिषिद्ध क्षेत्र" से धारा 20क के अधीन प्रतिषिद्ध क्षेत्र के रूप में विनिर्दिष्ट क्षेत्र या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(ड) "संरक्षित क्षेत्र" से कोई ऐसा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ढ़) "संरक्षित संस्मारक" से कोई ऐसा प्राचीन संस्मारक अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ण) "विनियमित क्षेत्र" से धारा 20ख के अधीन विनिर्दिष्ट या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(त) "पुन: निर्माण" से किसी संरचना या भवन का उसकी पूर्व विद्यमान संरचना में ऐसा कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसकी क्षैतिजीय और ऊर्ध्वाकार सीमाएं समान हैं;

(थ) "मरम्मत और पुनरुद्धार" से किसी पूर्व विद्यमान संरचना या भवन के परिवर्तन अभिप्रेत हैं, किन्तु इसके अंतर्गत निर्माण या पुन: निर्माण नहीं होंगे।

2. इसमें प्रयुक्त और परिभाषित नहीं किए गए शब्दों और अभिव्यक्तियों का आशय वही अर्थ होगा जैसा अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों में समनुदेशित किया गया है।

अध्याय II

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम,1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि

2.1 अधिनियम की पृष्ठभूमि:

धरोहर उप-विधियों का उद्देश्य केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित संस्मारकों की सभी दिशाओं में 300 मीटर के अंदर भौतिक, सामाजिक और आर्थिक दखल के बारे में मार्गदर्शन देना है। 300 मीटर के क्षेत्र को दो भागों में बॉटा गया है **(i) प्रतिषिद्ध क्षेत्र,** यह क्षेत्र संरक्षित क्षेत्र अथवा संरक्षित संस्मारक की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 100 मीटर की दूरी तक फैला है और **(ii) विनियमित क्षेत्र,** यह क्षेत्र प्रतिषिद्ध क्षेत्र की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 200 मीटर की दूरी तक फैला है।

अधिनियम के उपबंधों के अनुसार, कोई भी व्यक्ति संरक्षित क्षेत्र और प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी प्रकार का निर्माण अथवा खनन का कार्य नहीं कर सकता जबकि ऐसा कोई भवन अथवा संरचना जो प्रतिषिद्ध क्षेत्र में 16 जून,1992 से पूर्व मौजूद था अथवा जिसका निर्माण बाद में महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अनुमति से हुआ था, विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना का निर्माण, पुन:निर्माण, मरम्मत अथवा पुनरुद्धार की अनुमति सक्षम प्राधिकारी से लेना अनिवार्य है।

2.2 धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ और प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधियों का विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम 22 में संरक्षित संस्मारकों के लिए उप-विधि बनाना विनिर्दिष्ट है। नियम में धरोहर उप-विधि बनाने के लिए मापदंडों का प्रावधान है। राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें तथा कार्य निष्पादन) नियम, 2011, नियम 18 में प्राधिकरण द्वारा धरोहर उप-विधियों के अनुमोदन की प्रक्रिया विनिर्दिष्ट है।

2.3 आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग में प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मरम्मत और पुनरुद्धार अथवा विनियमित क्षेत्र में निर्माण अथवा पुनर्निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण के लिए नीचे दिए गए विवरण के अनुसार आवेदन का ब्यौरा विनिर्दिष्ट है:

(क) कोई व्यक्ति जो किसी ऐसे भवन अथवा संरचना का स्वामी है जो 16 जून, 1992 से पहले प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मौजूद था अथवा जिसका निर्माण इसके उपरांत महानिदेशक के अनुमोदन से हुआ था तथा जो ऐसे भवन अथवा संरचना का किसी प्रकार की मरम्मत अथवा नवीकरण का काम कराना चाहता है तो वह ऐसी मरम्मत और नवीकरण, जैसा भी स्थिति हो, को कराने के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ख) कोई व्यक्ति जो किसी विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना अथवा भूमि का स्वामी है और वह ऐसी भूमि पर ऐसे भवन अथवा संरचना अथवा का कोई निर्माण अथवा पुन:निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, करना चाहता है तो वह निर्माण अथवा पुन:निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ग) सभी संबंधित सूचना प्रस्तुत करने तथा राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष तथा सदस्यों की सेवा की शर्तें और कार्य संचालन) नियम, 2011 के अनुपालन की जिम्मेदारी आवेदक की होगी।

अध्याय III

संरक्षित संस्मारक - सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड का स्थान और अवस्थिति

3.1 संस्मारक का स्थान और अवस्थिति:

संरक्षित संस्मारक सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर है जो अल्मोड़ा जिले के कटारमल गांव में स्थित है।

इस मंदिर के लिए भौगोलिक निर्देशांक **अक्षांश 29^0 37'57.06" N; देशांतर 79 36'53.05" E** है।

इस मंदिर को स्थानीय रूप से *"बारा आदित्य"* या महान सूर्य देवता के रूप में जाना जाता है। स्थल के लिए निकटतम हवाई अड्डा पंत नगर हवाई अड्डा है जो 132.5 किलोमीटर की दूरी पर है और निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम रेलवे स्टेशन है जो 98.5 किलोमीटर की दूरी पर है।

यह समुद्र तल से 1,423 मीटर की ऊँचाई पर निचली हिमालय श्रृंखला में पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। यह मंदिर चारों तरफ से पहाड़ों और देवदार के पेड़ों से घिरा हुआ है, जो हिमालय का शानदार दृश्य प्रदान करता है।

चित्र 1: सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड का स्थान दर्शाता गूगल मानचित्र

3.2 संस्मारक की संरक्षित सीमा:

संरक्षित संस्मारक – **"सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड"** की संरक्षित सीमा **अनुलग्नक-I** में देखी जा सकती है।

3.2.1 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अभिलेख के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/योजना:

संरक्षित संस्मारक – **"सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड"** की अधिसूचना **अनुलग्नक-II** में देखी जा सकती है।

3.3 संस्मारक का इतिहास:

माना जाता है कि सूर्य मंदिर जिसे "बारा आदित्य" के नाम से जाना जाता है, कुमाऊँ क्षेत्र के सबसे बड़े और सबसे ऊँचे मंदिरों में से एक है। ऐसा कहा जाता है कि इसे मध्य हिमालयी क्षेत्र पर शासन करने वाले कत्यूरी राजवंश के राजा कटारमल ने बनवाया था। मंदिर परिसर में मुख्य मंदिर के साथ-साथ 45 छोटे मंदिर हैं। मंदिर के स्तंभों पर लिखे गए शिलालेखों और वास्तुकला की विशेषताओं के आधार पर यह माना जाता है कि मुख्य मंदिर का निर्माण 13वीं शताब्दी ई. के आसपास हुआ होगा। माना जाता है कि मुख्य मंदिर के चारों ओर छोटे मंदिर 9वीं से 13वीं शताब्दी ई.[1] के बीच बने हैं।

3.4 संस्मारक का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएँ, तत्व, सामग्री, आदि):

मुख्य मंदिर के साथ-साथ छोटे मंदिरों का निर्माण उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में प्रचलित नागर शैली में किया गया है। "बारा आदित्य" को समर्पित मुख्य मंदिर परिसर के दक्षिणी छोर पर स्थित है और इसमें *गर्भगृह* तथा *मंडप* शामिल हैं। *गर्भगृह* या *पवित्र* स्थान एक वक्रीय शिखर के साथ योजना में *त्रि-रथ* है। मंदिर संरचना का शिखर लगभग बरकरार है, लेकिन इसका मुकुट अलग[2] हो गया है। मंडप पत्थर के चार विशाल खंभों पर टिकी स्लेट की नुकीली छत से ढका हुआ है। परिसर के भीतर अन्य छोटे मंदिर पेंसिल-पतली शिखर जैसी संरचनाएं हैं, जिन पर नालीदार आमलका[3] हैं, जिनमें से कुछ बरकरार हैं। ऐसा माना जाता है कि इन छोटे मंदिरों का निर्माण अलग-अलग समय[2] पर होता रहा।

3.5 वर्तमान स्थिति:

3.5.1 संस्मारक की स्थिति - स्थिति आकलन:

संरक्षित संस्मारक का रखरखाव और संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का विशेष अधिकार क्षेत्र है। संस्मारक की वर्तमान स्थिति को दर्शाने वाले चित्र **अनुलग्नक-V** में संलग्न हैं।

3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या:

इन संस्मारकों पर प्रतिदिन औसतन 100-150 पर्यटक आते हैं। मंदिर में जनवरी माह में, विशेषकर रविवार तथा मकर संक्रांति और सूर्य पर्व जैसे त्यौहारों पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

---

[1] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, (देहरादून सर्कल)

[2] उत्तरांचल की कला और वास्तुकला, ओसी हांडा एवं मधु जैन

[3] *अमलका* एक खंडित या सुमेलित पत्थर की डिस्क है, जिसके किनारे पर आमतौर पर धारियाँ होती हैं जो नागर मंदिर के शीर्ष को ढकती हैं।

अध्याय IV

स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में मौजूदा ज़ोनिंग, यदि कोई हो

4.1 मौजूदा ज़ोनिंग:

वर्तमान में मंदिर स्थल अपने प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र के साथ ग्राम पंचायत- कटारमल, जिला अल्मोड़ा के क्षेत्र में स्थित है। इस संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के लिए कोई मौजूदा ज़ोनिंग नहीं है।

4.2 स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश:

स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा कोई दिशानिर्देश उपलब्ध नहीं कराए गए हैं; इसलिए यह धरोहर उप-विधि स्थानीय भवन उप-नियमों पर वरीयता रखता है।

अध्याय V

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अभिलेख (रिकार्ड) में परिभाषित सीमाओं के आधार पर प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों की प्रथम अनुसूची नियम 21(1)/सर्वेक्षण योजना के अनुसार सूचना

5.1 संस्मारक की सर्वेक्षण योजना:

सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड की सर्वेक्षण योजना **अनुलग्नक-I** में देखी जा सकती है।

5.2 सर्वेक्षित आंकड़ों का विश्लेषण:

5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण:

संस्मारकों का संरक्षित क्षेत्र लगभग 1,374 वर्गमीटर है।

संस्मारकों का प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 48,036 वर्गमीटर है।

संस्मारकों का विनियमित क्षेत्र लगभग 3,22,152 वर्गमीटर है।

5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण:

<u>प्रतिषिद्ध क्षेत्र:</u>

मंदिर स्थल के आसपास का प्रतिषिद्ध क्षेत्र मुख्यतः कृषि भूमि, सड़कों और रास्तों से घिरा हुआ है तथा पूर्वी दिशा में कोई निर्मित संरचना नहीं है। उत्तरी दिशा में कुछ घर और एक मंदिर है तथा पश्चिमी दिशा में गंगनाथ मंदिर (स्थानीय देवता को समर्पित) है तथा प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर कुमाऊं मंडल विकास निगम पर्यटक गेस्ट हाउस का एक हिस्सा है।

<u>विनियमित क्षेत्र:</u>

ज़्यादातर निर्माण विनियमित क्षेत्र के उत्तरी हिस्से में है। पश्चिमी हिस्से में कुमाऊं मंडल विकास निगम पर्यटक गेस्ट हाउस और टैंक है। विनियमित क्षेत्र के दक्षिणी हिस्से में कोई निर्माण नहीं है। पूर्वी हिस्से में कुछ घर हैं।

5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण:

<u>प्रतिषिद्ध क्षेत्र:</u>

उत्तर: इस दिशा में कृषि भूमि, रास्ते और वनस्पति के साथ खुले स्थान मौजूद हैं।

दक्षिण: इस दिशा में ढलानदार भूभाग पर दूर-दूर वनस्पति के साथ खुला क्षेत्र मौजूद है।

पूर्व: इस दिशा में ढलानदार भूभाग पर कृषि भूमि और खुले स्थान मौजूद हैं।

पश्चिम: इस दिशा में वनस्पति के साथ पहाड़ी भूभाग मौजूद हैं।

<u>विनियमित क्षेत्र:</u>

उत्तर: इस दिशा में कृषि भूमि, रास्ते और खुले क्षेत्र स्थित हैं।

दक्षिण: इस दिशा में ढलानदार भूभाग वाला खुला क्षेत्र मौजूद है।

पूर्व: इस दिशा में कृषि भूमि, खुला क्षेत्र और ढलानदार भूभाग मौजूद हैं।

पश्चिम: इस दिशा में बिखरे भूभाग वाला ऊंचा-नीचा भूभाग मौजूद है।

5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि:

भूमि के दोनों ओर हरे-भरे खुले क्षेत्र से घिरे क्षेत्र में पैदल पथ बनाए गए हैं जो मंदिर को विनियमित क्षेत्र के भीतर गांव की मुख्य सड़क से जोड़ते हैं जो आगे राष्ट्रीय राजमार्ग 109 (एनएच 109) तक जाता है।

5.2.5 भवनों की ऊंचाई (क्षेत्र-वार):

प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर उत्तर की ओर कुछ घर हैं जिनकी ऊँचाई G+1 मंजिल (लगभग 5.5 मीटर) है। पश्चिम की ओर कुमाऊँ मंडल विकास निगम पर्यटक विश्राम गृह है जिसकी ऊँचाई G+2 (लगभग 10 मीटर) है। उत्तर की ओर विनियमित क्षेत्र के भीतर G से G+1 मंजिल तक के घर हैं।

5.2.6 प्रतिषिद्ध/विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा राज्य संरक्षित संस्मारक और सूचीबद्ध धरोहर भवन, यदि उपलब्ध हों:

संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्षेत्र में कोई राज्य संरक्षित संस्मारक या अन्य विरासत भवन नहीं है।

5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं:

सार्वजनिक सुविधाएं जैसे पेयजल, शौचालय और संकेतक उपलब्ध हैं।

5.2.8 संस्मारक तक पहुंच:

मंदिर स्थल तक पहुँचने के लिए सबसे नजदीकी राजमार्ग-एनएच 109 है। मोटर वाहन चलने योग्य गाँव की सड़क संरक्षित क्षेत्र के उत्तर-पश्चिम से शुरू होती है और संरक्षित क्षेत्र से लगभग एक से दो किलोमीटर पहले समाप्त होती है। यह आगे एक पैदल मार्ग से जुड़ी हुई है, जो विनियमित क्षेत्र के भीतर है और जो मंदिर की ओर जाता है।

5.2.9 अवसंरचनात्मक सेवाएं (जल आपूर्ति, वर्षा जल निकासी, सीवेज, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पार्किंग आदि):

पार्किंग मंदिर परिसर से लगभग 500 मीटर की दूरी पर है और कटारमल गेट से बहुत करीब है। जलापूर्ति और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सुविधाएं उपलब्ध हैं।

5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र की प्रस्तावित ज़ोनिंग:

स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा अभी तक कोई भूमि-उपयोग योजना, मास्टर प्लान या ज़ोनिंग विनियम तैयार नहीं किए गए हैं, इसलिए भूमि-उपयोग योजना/मास्टर प्लान/ज़ोनिंग विनियम तैयार करते समय इस धरोहर उप-विधि में उल्लिखित प्रावधानों पर विचार करना और उन्हें शामिल करना अनिवार्य है। मौजूदा भूमि उपयोग में परिवर्तन को हतोत्साहित किया जाता है।

अध्याय VI

संस्मारक का वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व

6.1 वास्तुकला, छवि-चित्रण, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व:

मुख्य मंदिर और 44 छोटे मंदिरों वाला यह मंदिर परिसर इस क्षेत्र में 9वीं से 13वीं शताब्दी के दौरान प्रचलित मंदिर वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है। वास्तुकला की दृष्टि से इसे नागर शैली के मंदिर वास्तुकला के रूप में पहचाना जा सकता है जिसमें घुमावदार *शिखर* और शीर्ष पर नालीदार *आमलक* हैं। मंदिर परिसर का निर्माण स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों यानी पत्थर और लकड़ी से किया गया है। ऐतिहासिक रूप से यह कत्यूरी राजवंश की समय अवधि को दर्शाता है जिसके दौरान इस मंदिर का निर्माण किया गया है।

6.2 संस्मारक की संवेदनशीलता (अर्थात विकासात्मक दबाव, शहरीकरण, जनसंख्या दबाव, आदि):

संरक्षित संस्मारक के पूर्वी, दक्षिणी और पश्चिमी हिस्से में कोई भी बड़ी निर्माण गतिविधि नहीं है। हालांकि, संरक्षित संस्मारक के उत्तर में कई घर और बड़ी निर्माण गतिविधियाँ इस क्षेत्र में विकास के दबाव को बढ़ा रही हैं। तीर्थयात्रियों की बढ़ती संख्या और पर्यटन संबंधी गतिविधियों के कारण निकट भविष्य में संरक्षित संस्मारक की संवेदनशीलता बढ़ सकती है।

6.3 संरक्षित संस्मारकों या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक पहाड़ी इलाके में स्थित होने के कारण विनियमित क्षेत्र की दक्षिणी और पूर्वी दिशाओं से दिखाई देता है। हालाँकि, उत्तरी और पश्चिमी दिशाओं से दिखाई देना सीमित है।

6.4 पहचान किया जाने वाला भूमि उपयोग:

वर्तमान में संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र के भीतर कृषि भूमि, चरागाह और आवासीय क्षेत्र हैं।

6.5 संरक्षित संस्मारकों के अलावा अन्य पुरातात्विक धरोहर:

प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर संरक्षित संस्मारक की पश्चिमी सीमा दीवार के बाहर एक छोटे मंदिर के अवशेष मौजूद हैं।

6.6 सांस्कृतिक परिदृश्य:

संरक्षित संस्मारक पहाड़ी इलाके में स्थित है और तीन दिशाओं - दक्षिणी, पूर्वी और पश्चिमी तरफ खुले हरे-भरे क्षेत्रों से घिरा हुआ है। ये विशेषताएं संरक्षित संस्मारक के आसपास के सांस्कृतिक परिदृश्य का एक अभिन्न अंग हैं।

6.7 महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य जो सांस्कृतिक परिदृश्य का हिस्सा बनते हैं और संस्मारक को पर्यावरण प्रदूषण से बचाने में भी मदद करते हैं:

संरक्षित संस्मारक पहाड़ी क्षेत्र में स्थित होने के कारण तीनों ओर - दक्षिणी, पूर्वी और पश्चिमी ओर से खुले हरे-भरे क्षेत्रों से घिरा होने के कारण प्राकृतिक परिदृश्य का एक अनिवार्य हिस्सा है।

6.8 खुली जगह और निर्माण का उपयोग:

पूर्वी और दक्षिणी तरफ, निषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों में बड़े खुले स्थान हैं। उनमें से कुछ भूखंड खाली हैं, जबकि अन्य का उपयोग खेती के लिए किया जाता है। दक्षिणी तरफ निषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र में खुले हरे क्षेत्रों के साथ एक पहाड़ी इलाका है। अधिकांश आवासीय इमारतें उत्तरी तरफ स्थित हैं।

6.9 पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ:

सूर्य पर्व मेला हर साल, 15 दिसंबर से 15 जनवरी के बीच मनाया जाता है। इस दौरान कई सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की जाती हैं।

6.10 संस्मारक और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज:

यह स्थल उत्तरी दिशा को छोड़कर सभी दिशाओं में खुली भूमि और हरियाली से घिरा हुआ है। इसलिए संस्मारक के लिए दिखाई देने वाले क्षितिज में ज्यादातर खुले हरियाली वाले क्षेत्र और कुछ आवासीय घर हैं। चूंकि संरक्षित संस्मारक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है, इसलिए यह विनियमित क्षेत्र के सभी तरफ से दिखाई देता है।

6.11 पारंपरिक वास्तुकला:

विनियमित क्षेत्र में कुमाऊं क्षेत्र की पारंपरिक वास्तुकला में कुछ आवासीय घर पाए जाते हैं। इनकी मुख्य विशेषताओं में लकड़ी के दरवाजे और खिड़कियां, स्लेट की छत के साथ एक्सपोज्ड पत्थर या ईंट की दीवार शामिल हैं।

6.12 स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा यथा उपलब्ध विकास योजना:

स्थानीय प्राधिकरियों द्वारा अभी तक कोई विकास योजना तैयार नहीं की गई है।

6.13 अनुमेय भवन संबंधी मापदंड:

6.13.1 मरम्मत और नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में):

आंतरिक परिवर्तन और अनुकूली पुनः उपयोग की सामान्य रूप से अनुमति दी जा सकती है। हालाँकि, बाहरी परिवर्तन सक्षम प्राधिकारी द्वारा विस्तृत जाँच के अधीन होंगे। ऐसे परिवर्तन जिनमें रेट्रोफिटिंग/नवीनीकरण शामिल है, की अनुमति तब दी जा सकती है जब इमारत संरचनात्मक रूप से कमज़ोर या असुरक्षित हो या जब उस पर किसी प्राकृतिक आपदा का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हो और नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक हो। मूल इमारत शब्दावली और लेआउट के साथ-साथ निर्मित-खुले संबंधों का पालन किया जाना चाहिए। सक्षम प्राधिकारी से पूर्व अनुमति के अधीन इमारतों की सामान्य मरम्मत और रखरखाव की अनुमति होगी।

भवन/संरचनाओं में मरम्मत और नवीनीकरण संरक्षित संस्मारक और उसके आस-पास के क्षेत्रों की धरोहर विशेषताओं के अनुरूप और उससे मेल खाता होना चाहिए। एल्युमिनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), लैमिनेट्स,

टाइलिंग या ग्लेज़िंग जैसी नई क्लैडिंग सामग्री की अनुमति नहीं दी जाएगी। मरम्मत और नवीनीकरण कार्यों को करने में स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6.13.2 पुनर्निर्माण:

पुनर्निर्माण को एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 2(त) में परिभाषित किया गया है तथा विनियमित क्षेत्र में पुनर्निर्माण की अनुमति एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग(2) और एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 6(IV) और नियम 7 के अनुसार दी जाती है। किसी संरक्षित संस्मारक या संरक्षित स्थल के प्रतिषिद्ध या विनियमित क्षेत्र में स्थित किसी भी प्रकार के भवन या सरंचना, जो प्राकृतिक आपदाओं से ध्वस्त या क्षतिग्रस्त हो गयी है, और जिसकी मरम्मत नहीं की जा सकती है, के मामले में पुनर्निर्माण की एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 16 के अनुसार दी जाती है। प्राकृतिक आपदा के कारण क्षतिग्रस्त भवन अथवा संरचना के पुनर्निर्माण की अनुमति उसी सीमा तक दी जाएगी जितनी कि क्षति हुई है। पुनर्निर्माण के मामले में पुरानी इमारत के प्रतिस्थापन के रूप में नई संरचना या इमारत को पहले से मौजूद संरचना के अनुसार उसी क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर सीमाओं का पालन करना होगा। अग्रभाग में असंगत सामग्री जैसे ग्लेज़िंग, मेटल क्लैडिंग, एल्युमीनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), टाइल्स, लैमिनेट्स के उपयोग की अनुमति नहीं होगी। नई संरचना संरक्षित संस्मारक के धरोहर क्षेत्र और उसके आसपास के क्षेत्र के साथ मेल खाती और उसके अनुरूप होनी चाहिए।

6.13.3 <u>नया निर्माण:</u>

6.13.3 क प्रतिषिद्ध क्षेत्र:

एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20क(4) के अनुसार, संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर किसी भी सार्वजनिक कार्य या जनता के लिए आवश्यक परियोजना या अन्य निर्माण सहित किसी भी नए निर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी।

6.13.3 ख विनियमित क्षेत्र:

चूंकि स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा कोई भूमि-उपयोग योजना/मास्टर प्लान/ज़ोनिंग विनियम तैयार नहीं किया गया है, इसलिए इस धरोहर उप-विधि में निर्धारित ऊँचाई और अन्य भवन संबंधी मापदंड संरक्षित संस्मारक के विनियमित क्षेत्र में सभी प्रकार के निर्माण के लिए लागू होंगे।

कृषि क्षेत्रों में निर्दिष्ट छूट के अंतर्गत आने वाले निर्माणों की अनुमति दी जा सकती है। कृषि भूमि पर इन अनुमेय निर्माणों में खेती में लगे लोगों के लिए आवास और सहायक इमारतों के लिए संरचनाओं का निर्माण या फसलों, चारा, खाद, कृषि उपकरणों और अन्य समान सुविधाओं के भंडारण के लिए संरचनाओं का निर्माण शामिल है। विकास पैटर्न मुख्य रूप से कम घनत्व और कम ऊंचाई वाला होना चाहिए।

1. स्थल पर नए निर्माण की ऊंचाई (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन रूम, एचवीएसी इकाई, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, पेंटहाउस, टेरेस गार्डन की संरचनाएं, आदि सहित) या छत पर कोई अन्य सेवाएं:

नए निर्माण या मौजूदा इमारतों में परिवर्धन/परिवर्तन के लिए अधिकतम ऊंचाई सीमा **7.50 मीटर** से अधिक नहीं होगी (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन कक्ष, एचवीएसी इकाई, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, टैरेस गार्डन की पेंटहाउस संरचना आदि सहित) या छत पर कोई अन्य सेवाएं।

जहां तक संभव हो, बेसमेंट के निर्माण को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. उपयोग:

i. चूंकि स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा भूमि उपयोग निर्धारित नहीं किया गया है, इसलिए यह अनुशंसा की जाती है कि संरक्षित स्मारक के आसपास की वर्तमान स्थिति को बनाए रखने के लिए मौजूदा भूमि उपयोग में कोई परिवर्तन न किया जाए।

ii. संरक्षित स्मारक के विनियमित क्षेत्र में आने वाली कृषि भूमि पर केवल कृषि और कृषि संबंधी निर्माण की अनुमति होगी।

iii. विनियमित क्षेत्र में उद्योगों और कारखानों की स्थापना की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

3. अग्रभाग डिजाइन:

i. पारंपरिक स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री का उपयोग करके स्थानीय वास्तुकला को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

ii. नए निर्माण का अग्रभाग डिजाइन प्रकृति में न्यूनतम होना चाहिए, ताकि यह संरक्षित स्मारक पर हावी न हो। बाहरी अग्रभाग पर क्लैडिंग या पैनलिंग के उपयोग जैसी घुसपैठ वाली सामग्रियों को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

iii. स्लेट टाइलों के साथ ढलान वाली छतें, तिबारी लकड़ी की रेलिंग, अलंकरण और विशिष्ट दरवाजा-खिड़की शैलियों आदि जैसे प्रचलित पारंपरिक वास्तुशिल्प तत्वों और विशेषताओं का उपयोग करने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

iv. बाहरी अग्रभाग पर बाहरी फिनिश के लिए एल्यूमीनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लेमिनेट (एचपीएल) और किसी भी अन्य सिंथेटिक सामग्री जैसी घुसपैठ वाली सामग्रियों के उपयोग को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

v. रंगीन ग्लेज्ड अग्रभाग के उपयोग को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

4. छत का डिज़ाइन:

i. स्लेट टाइलों के साथ पारंपरिक ढलान वाली छत प्रणाली का पालन किया जा सकता है।

ii. इमारत की छत पर एल्युमिनियम, फाइबर ग्लास, पॉलीकार्बोनेट या इसी तरह की सामग्री का उपयोग करके अस्थायी प्रकृति की संरचनाओं का निर्माण हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

iii. सभी सेवाएँ जैसे कि बड़ी एयर कंडीशनिंग इकाइयाँ, छत पर पानी के भंडारण टैंक या छत पर रखे बड़े जनरेटर सेट को स्क्रीन दीवारों (ईंट/सीमेंट शीट, लौवर, जालियाँ या ऐसे अन्य डिज़ाइन तत्व) का उपयोग करके बंद किया जाना चाहिए। इन सभी सेवाओं को अधिकतम स्वीकार्य ऊँचाई में शामिल किया जाना चाहिए।

iv. नई इमारत की छतें उनके आस-पास की छतों की विशेषताओं के अनुरूप होनी चाहिए। उन्हें आस-पास की इमारतों की छत के आकार, अभिविन्यास और ढलान के साथ संरेखित करके दृष्टिगत रूप से संगत होना चाहिए।

5. निर्माण सामग्री:

i. स्थानीय निर्माण सामग्री जैसे मिट्टी, चिकनी मिट्टी, बांस, पत्थर, स्लेट टाइल, लकड़ी, चूना प्लास्टर और अन्य ऐसी सामग्री का उपयोग वास्तुकला में किया जाना चाहिए।

ii. संरक्षित स्मारक के सभी सड़क के अग्रभागों पर निर्माण सामग्री और रंग में एकरूपता बनाए रखी जानी चाहिए।

iii. ईंट और सीमेंट जैसी आधुनिक निर्माण सामग्री का उपयोग किया जा सकता है, बशर्ते कि वे संरक्षित स्मारक और उसके आसपास के क्षेत्रों के विरासत चरित्र को बाधित या समझौता न करें।

iv. ऐसी सामग्री जो पारंपरिक वास्तुकला को पूरक बनाती है, का उपयोग क्षेत्र के चरित्र को बनाए रखने के लिए किया जाना चाहिए।

6. रंग:

बाहरी रंग संरक्षित संस्मारक के साथ सामंजस्य रखते हुए तटस्थ स्वर का होना चाहिए जैसे कि बफ सैंडस्टोन रंग, सफेद, बेज और अन्य मिट्टी के रंग जो संरक्षित संस्मारक और उसके एकदम आसपास के वातावरण के साथ कोई विपरीतता उत्पन्न न करें।

7. अन्य विनियम:

नदी पर पुल, फुट-ओवर ब्रिज, केबल कार परियोजना, रोपवे टर्मिनल भवन, बांध, बहु-स्तरीय पार्किंग या ऐसी किसी भी ऐसी परियोजना जैसे किसी भी बड़े पैमाने पर सार्वजनिक बुनियादी ढांचा परियोजना के निर्माण का प्रस्ताव विस्तृत विरासत प्रभाव आकलन रिपोर्ट के अध्यधीन होगा।

6.14 आगंतुक सुविधाएं और प्रसाधन:

संरक्षित संस्मारक के आसपास व्यवहार्यता के अनुसार आगंतुक सुविधाओं और प्रसाधनों पर विचार किया जा सकता है।

अध्याय VII
स्थल विशिष्ट सिफारिशें

7.1 स्थल विशिष्ट सिफारिशें:

i. संरक्षित संस्मारक या उसके आस-पास के क्षेत्रों में एलईडी या डिजिटल साइन, प्लास्टिक फाइबर ग्लास या किसी अन्य अत्यधिक परावर्तक सिंथेटिक सामग्री का उपयोग संकेतक के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

ii. संरक्षित संस्मारक के पास, विशेष रूप से संस्मारक की दीवारों पर होर्डिंग, बिलबोर्ड और पोस्टर के रूप में किसी भी विज्ञापन की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

iii. विनियमित क्षेत्र में टेलीफोन एक्सचेंज, मोबाइल टावर, बिजली ट्रांसमिशन टावर, चिमनियाँ और ओवरहेड पानी की टंकियों को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

iv. स्मारक के निषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों में आने वाले प्राकृतिक भूभाग को मौजूदा रूप में बनाए रखा जाना चाहिए।बाढ़ संभावित क्षेत्र में आम जनता की सुरक्षा के लिए स्थानीय निकायों द्वारा उठाए गए किसी भी उपाय की अनुमति दी जा सकती है।

v. संरक्षित संस्मारक के आसपास के क्षेत्र में आवागमन के लिए पर्यावरण के अनुकूल वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है ताकि वाहनों से निकलने वाले उत्सर्जन और कंपन के कारण संस्मारक पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को कम किया जा सके।

vi. वर्षा जल संचयन आदि जैसी सर्वोत्तम प्रथाओं सहित हरित भवनों के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

vii. भविष्य के विकास को संतुलित करने और संरक्षित स्मारक के आसपास की अखंडता को बनाए रखने के लिए स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा आगंतुक प्रबंधन योजना तैयार करने की सिफारिश की जाती है।

7.2 अन्य सिफारिशें:

i. क्षेत्र को प्लास्टिक एवं पॉलीथीन मुक्त क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिए।

ii. निर्धारित मानकों और स्थल की परिस्थितियों की व्यवहार्यता के अनुसार दिव्यांग व्यक्तियों के लिए प्रावधानों को प्रोत्साहित किया जाए।

iii. सांस्कृतिक विरासत स्थलों और परिसरों के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दिशानिर्देश https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf पर देखे जा सकते हैं।

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

In exercise of the powers conferred by section 20E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended read with Rule (22) of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and Other Functions of the Competent Authority) Rule, 2011, the following Heritage Bye-Laws for the Protected Monument – **"A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District -Almora, Uttarakhand"** prepared by the Competent Authority and in consultation with the DIT, University, Dehradun were published on 23.06.2023 as required by Rule 18, sub-rule (2) of the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, for inviting objections or suggestions from the public;

The objections/suggestions, received before the specified date, have duly been considered by the National Monuments Authority in consultation with the Competent Authority.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (5) of the Section 20 E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended the National Monuments Authority, hereby makes the following bye-laws, namely:-

Heritage Bye-Laws for "A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand"

CHAPTER I

PRELIMINARY

1.1 Short title, Extent and Commencements:

(i) These bye-laws may be called the National Monuments Authority Heritage bye-laws 2025 of the Protected Monument – **"A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand"**.

(ii) They shall extend to the entire Prohibited and Regulated Area of the monuments.

(iii) The provisions of these bye-laws shall have effect notwithstanding anything inconsistent therewith contained in any other bye-laws, whether made before or after the commencement of these bye-laws, or in any instrument having effect by virtue of any bye-laws. It shall not be obligatory to carry out amendments in these bye-laws to make them consistent with any other bye-laws.

(iv) They shall come into force with effect from the date of their publication.

1.2 Definitions:-

1. In these bye-laws, unless the context otherwise requires, the definitions as given in the Act or the rules made thereunder have been reproduced hereunder for the sake of convenience:-

   (a) "Ancient monument" means any structure, erection or monument, or any tumulus or place or interment, or any cave, rock sculpture, inscription or monolith, which is of historical, archaeological or artistic interest and which has been in existence for not less than one hundred years, and includes: -

      (i) the remains of an ancient monument,

      (ii) the site of an ancient monument,

      (iii) such portion of land adjoining the site of an ancient monument as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving such monument, and

      (iv) the means of access to, and convenient inspection of an ancient monument;

   (b) "Archaeological site and remains" means any area which contains or is reasonably believed to contain ruins or relics of historical or archaeological importance which have been in existence for not less than one hundred years, and includes:

      (i) such portion of land adjoining the area as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving it, and

      (ii) the means of access to, and convenient inspection of the area;

   (c) "Act" means the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended;

   (d) "Archaeological officer" means an officer of the Department of Archaeology of the Government of India not lower in rank than Assistant Superintendent of Archaeology;

   (e) "Authority" means the National Monuments Authority constituted under Section 20 F of the Act;

   (f) "Competent authority" means an officer not below the rank of Director of archaeology or Commissioner of archaeology of the Central or State Government or equivalent rank, specified, by notification in the Official Gazette, as the competent authority by the Central Government to perform functions under this Act:

      Provided that the Central Government may, by notification in the Official Gazette, specify different competent authorities for the purpose of section 20C, 20D and 20E;

(g) "construction" means any erection of a structure or a building, including any addition or extension thereto either vertically or horizontally, but does not include any re-construction, repair and renovation of an existing structure or building, or, construction, maintenance and cleansing of drains and drainage works and of public latrines, urinals and similar conveniences, or the construction and maintenance of works meant for providing supply of water for public, or, the construction or maintenance, extension, management for supply and distribution of electricity to the public or provision for similar facilities for public;

(h) "Government" means the Government of India;

(i) "maintain", with its grammatical variations and cognate expressions, includes the fencing, covering in, repairing, restoring and cleansing of a protected monument, and the doing of any act which may be necessary for the purpose of preserving a protected monument or of securing convenient access thereto;

(j) "owner" includes-

(i) a joint owner invested with powers of management on behalf of himself and other joint owners and the successor-in-title of any such owner; and

(ii) any manager or trustee exercising powers of management and the successor-in-office of any such manager or trustee;

(k) "prescribed" means prescribed by rules made under this Act;

(l) "Prohibited area" means any area specified or declared to be a prohibited area under section 20A;

(m) "Protected area" means any archaeological site and remains which is declared to be of national importance by or under this Act;

(n) "Protected monument" means any ancient monument which is declared to be of national importance by or under this Act;

(o) "Regulated area" means any area specified or declared to be a regulated area under section 20B of this Act;

(p) "re-construction" means any erection of a structure or building to its pre-existing structure, having the same horizontal and vertical limits;

(q) "Repair and renovation" means alterations to a pre-existing structure or building, but shall not include construction or re-construction;

2. The words and expressions used herein and not defined shall have the same meaning as assigned in the Act or the rules made thereunder.

CHAPTER II

Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains(AMASR) Act, 1958, as amended

2.1 Background of the Act:

The Heritage Bye-Laws are intended to guide physical, social and economic interventions within 300 metres in all directions of the Protected Monuments. The 300 metres area has been divided into two parts (i) the **Prohibited Area,** the area beginning at the limit of the Protected Area or the Protected Monument and extending to a distance of 100 metres in all directions and (ii) the **Regulated Area**, the area beginning at the limit of the Prohibited Area and extending to a distance of 200 metres in all directions.

As per the provisions of the Act, no person shall undertake any construction or mining operation in the Protected Area and Prohibited Area while permission for repair and renovation of any building or structure, which existed in the Prohibited Area before 16 June, 1992, or which had been subsequently constructed with the approval of Director General (DG), Archaeological Survey of India (ASI) and; permission for construction, re-construction, repair or renovation of any building or structure in the Regulated Area, must be sought from the Competent Authority.

2.2 Provision of the Act related to Heritage Bye-Laws:

Section 20E of AMASR Act, 1958, as amended and Rule 22 of Ancient Monument and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011, specifies framing of Heritage Bye-Laws for Protected Monuments. The Rule provides parameters for the preparation of Heritage Bye-Laws. Rule 18 of National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, specifies the process of approval of Heritage Bye-Laws by the Authority.

2.3 Rights and Responsibilities of the Applicant:

Section 20C of AMASR Act, 1958, as amended specifies details of application for repair and renovation in the Prohibited Area, or construction or re-construction or repair or renovation in the Regulated Area as described below:

a) Any person, who owns any building or structure, which existed in a Prohibited Area before 16th June, 1992, or, which had been subsequently constructed with the approval of the Director General, ASI and desires to carry out any repair or renovation of such building or structure, may make an application to the Competent Authority for carrying out such repair and renovation as the case may be.

b) Any person, who owns or possesses any building or structure or land in any Regulated Area, and desires to carry out any construction or re-construction or repair or renovation of such building or structure on such land, as the case may be, may make an application to the Competent Authority for carrying out construction or re-construction or repair or renovation as the case may be.

c) It is the responsibility of the applicant to submit all relevant information and abide by the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of the Authority and Conduct of Business) Rules, 2011.

CHAPTER III

Location and Setting of Protected Monument – A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District - Almora, Uttarakhand

3.1 Location and Setting of the Monument:

The Protected Monument is A large temple dedicated to the Sun situated in the village of Katarmal in District Almora.

The GPS Coordinates for this temple is **Latitude 29^0 37'57.06" N; Longitude 79^0 36'53.05" E**.

The temple is locally known as *"Bara Aditya"* or the great Sun God. The nearest airport to the site is Pant Nagar Airport which is at a distance of 132.5 km and the nearest railway station is Kathgodam Railway Station at a distance of 98.5 km.

It is situated on the hill top in the lower Himalayan range at an altitude of 1,423 meters above mean sea level. This temple is surrounded by mountains and Deodar trees on all sides, providing a spectacular view of Himalayas.

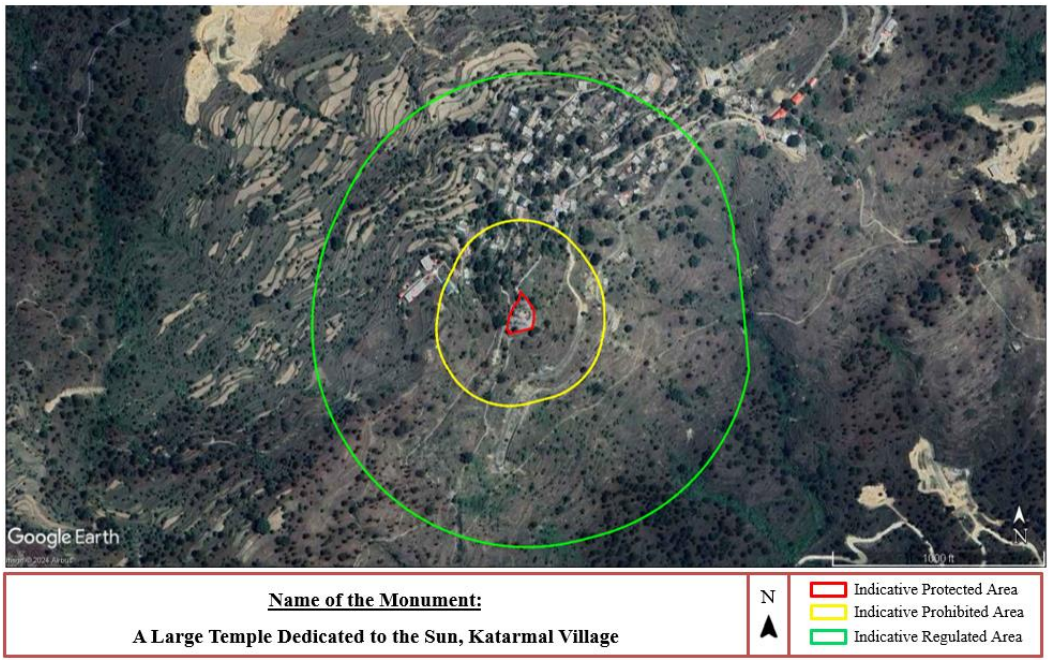

Image 1: Google map showing location of Protected Monument-A large temple dedicated to Sun, Katarmal, District - Almora, Uttarakhand

3.2 Protected boundary of the Monument:

The protected boundaries of the Monument – **"A large temple dedicated to Sun, Katarmal, District - Almora, Uttarakhand"** may be seen at **Annexure-I**.

3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records:

Notification of **A large temple dedicated to Sun, Katarmal, District - Almora, Uttarakhand** may be seen at **Annexure-II**.

3.3 History of the Monument:

The sun temple popularly known as "Bara Aditya" is believed to be one of the biggest and tallest temples of Kumaon region. It is said to have been built by King Katarmal, of Katyuri Dynasty which ruled the Central Himalayan region. Within the temple complex is the main temple along with 45 subsidiary shrines. On the basis of the architectural features and inscriptions written on the pillars of temple it is believed that the main temple may have been constructed around 13th Century CE. The small shrines surrounding the main temple are considered to have been built between 9th – 13th Century CE.[1]

3.4 Description of the Monument (architectural features, elements, materials, etc.):

The main temple along with the subsidiary temples are constructed in Nagara Style prevalent in the Kumaon region of Uttarakhand. The main temple dedicated to "Bara Aditya" is located on the Southern end of the complex and comprises of g*arbhagriha* and *mandapa. The* g*arbhagriha or sanctum* is *tri-ratha* in plan with a curvilinear *Shikhara*. The *shikhara* of temple structure stands almost intact, but its crown is severed off.[2] The *mandapa* is covered with the gabled roof of slate supported on the four massive stone pillars. The other smaller temples within the complex are pencil-thin spire-like structures surmounted by the fluted *amalakas*[3], some of which are intact. It is believed that that these subsidiary shrines continued to be built at different times.[2]

3.5 Current Status:

3.5.1 Condition of the Monument- condition assessment:

The maintenance and preservation of the Protected Monument is the exclusive domain of ASI. The photographs depicting the present condition of the monument is appended at **Annexure-V**.

3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers:

The average footfall of these monuments around 100 to 150 visitors per day. The temple receives major footfall in the month of January, specifically on Sundays and festivals like Makar Sankranti and Surya Purva.

[1] Dehradun Circle, ASI

[2] Art & Architecture of Uttaranchal, OC Handa & Madhu Jain

[3] *Amalaka* is a segmented or matched stone disk, usually with ridges on the rim covering the top of the Nagara temple

CHAPTER IV

Existing zoning, if any, in the local area development plans

4.1 Existing zoning:

At present, the temple site with its Prohibited and Regulated Area is situated within the area of the Gram Panchayat – Katarmal, District Almora. There are no existing zoning for the Prohibited and Regulated Areas of this Protected Monument.

4.2 Existing Guidelines of the local bodies:

There are no guidelines available by the local authorities; therefore, this Heritage Bye-Law takes precedence over the local building bye-laws.

CHAPTER V

Information as per First Schedule, Rule 21(1)/ Survey Plan of the Prohibited and the Regulated Areas on the basis of boundaries defined in Archaeological Survey of India records

5.1 Survey Plan of the Monument:

Survey Plan of A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District - Almora, Uttarakhand may be seen at **Annexure-I**.

5.2 Analysis of surveyed data:

5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details:

Total Protected Area of the monument is 1,374 sqm. (approximately)

Total Prohibited Area of the monument is 48,036 sqm. (approximately)

Total Regulated Area of the monument is 3,22,152 sqm. (approximately)

5.2.2 Description of built up area:

Prohibited Area:

The Prohibited Area around temple site is mostly surrounded by agriculatural land, roads and pathways with no built structures towards the Eastern Side. Towards the Northern side are a few houses and one temple and on the Western side is the Gangnath Temple (dedicated to local god), and part of Kumaon Mandal Vikas Nigam Tourist Guest House within the Prohibited Area.

Regulated Area:

The majority of built up is around the Northern side of the Regulated Area. Towards the Western side is the Kumaon Mandal Vikas Nigam Tourist Guest House and Tank. There are no built up on the Southern side of the Regulated Area. There are few houses on the Eastern Side.

5.2.3 Description of green/open spaces:

Prohibited Area:

North: Agricultural land, pathways and open spaces with vegetation exists in this direction.

South: Open area with scattered vegetation on slopy terrain exists in this direction.

East: Agricultural land and open spaces on slopy terrain exists in this direction.

West: Hilly terrain with vegetation exists in this direction.

Regulated Area:

North: Agricultural land, pathways and open area are located in this direction.

South: Open area with slopy terrain exits in this direction.

East: Agricultural land, open area and slopy terrain exists in this direction.

West: Undulated terrain with scattered terrain exists in this direction.

5.2.4 Area covered under circulation- roads, footpaths etc.:

There are pedestrian pathways built along the profile of the land surrounded by green open area on both side which connect the Temple to the main village road within the Regulated Area leading further to National Highway 109 (NH 109).

5.2.5 Heights of buildings (Zone wise):

Within the Prohibited Area, there are a few houses on the North Side with height of G+1 storey (approximately 5.5 metres). There is Kumaon Mandal Vikas Nigam Tourist Rest House on the Western side with height of G+2 (approximately 10 metres). The houses within the Regulated Area on the Northern Side are ranging from G to G+1 storeys.

5.2.6 State protected monuments and listed Heritage Buildings by local Authorities, if available, within the Prohibited/Regulated Area:

There is no state protected monument or any other heritage buildings present in the Prohibited and Regulated Areas of the Protected Monument.

5.2.7 Public amenities:

Public amenities like drinking water, toilet and signages are available at site.

5.2.8 Access to monuments:

The temple site is accessible by the nearest highway-NH 109. The motorable village road starts from the North -West of the Protected Area and ends approximately one to two kilometres before the Protected Area. This is further connected to a pedestrian pathway, which is within the Regulated Area, leading to the temple.

5.2.9 Infrastructure services (water supply, storm water drainage, sewage, solid waste management, parking etc.):

Parking is approximately 500 metres from the temple precinct and very close from the Katarmal gate. Water supply and solid waste management facilities are available.

5.2.10 Proposed zoning of the area as per guidelines of the Local Bodies:

No land-use plan, master plan or zoning regulations have been prepared as yet by the Local Authorities, therefore, when formulating land-use plans/ master plans/ zoning regulations, it is imperative to consider and incorporate the provisions outlined in this Heritage Bye-Laws. Alterations to the existing land use are discouraged.

CHAPTER VI

Architectural, historical and archaeological value of the monuments

6.1 Architectural, historical and archaeological value:

This temple complex comprising the main Temple with 44 subsidiary temples represents the temple architecture prevalent during the 9^{th} – 13^{th} Century CE in this region. Architecturally this may be identified as a Nagara style of temple architecture with curvilinear *shikhara* and fluted *amalakas* on the top. The temple complex is built with locally available materials i.e. stone and timber. Historically this represents the time period of Katyuri Dynasty during which this temple has been constructed.

6.2 Sensitivity of the monuments (e.g. developmental pressure, urbanization, population Pressure, etc.):

The Eastern, Southern and Western sides of the Protected Monument are devoid of any major construction activities. However, several houses and major construction activities in North of Protected Monument are increasing development pressure in this area. The rising footfall of pilgrims and in tourism related activities may heighten the sensitivity of the Protected Monument in near future.

6.3 Visibility from the Protected Monuments or Area and visibility from Regulated Area:

The Protected Monument, owing to it's location on a hilly terrain enjoys intervisibility from the Southern and Eastern directions of the Regulated Area. However, intervisibility from the Northern and the Western directions is restricted.

6.4 Land-use to be identified:

Currently there are agricultural land, grazing grounds and residential area within the Prohibited Area and Regulated Area of the Protected Monument.

6.5 Archaeological heritage remains other than protected monuments:

Remains of a small shrine are present outside the Western boundary wall of the Protected Monument within Prohibited Area.

6.6 Cultural landscapes:

The Protected Monument is situated on the hilly terrain and surrounded by open green areas on three directions – Southern, Eastern, and Western sides. These features form an integral part of the cultural landscape around the Protected Monument.

6.7 Significant natural landscapes that form part of cultural landscape and also help in protecting monuments from environmental pollution:

The Protected Monument because of its location on hilly terrain, surrounded by open green areas on all the three sides - the Southern, Eastern, and Western sides, forms an essential part of the natural landscape.

6.8 Usage of open space and constructions:

On the Eastern and Southern sides, there are large open spaces in the Prohibited and Regulated Areas. Amongst them, some plots are vacant, while others are used for farming. The Southern Side has a hilly terrain with open green areas in the Prohibited Area and the Regulated Area. Most of the residential buildings are located on the Northern side.

6.9 Traditional, historical and cultural activities:

Surya Parv Mela is celebrated in the months between 15 December to 15 January, every year. Several cultural activities are organized during the celebrations.

6.10 Skyline as visible from the monuments and from Regulated Areas:

The site is surrounded with open land and green cover in all directions except for Northern direction. Therefore, the skyline visible for the monument is mostly open green areas and few residential houses. Since the Protected Monument is situated on hill-top, it is visible from all the sides of Regulated Area.

6.11 Traditional Architecture:

A few residential houses in traditional architecture of Kumaon region are found in the Regulated Area. The main features of these include wooden doors and windows, exposed stone or brick wall with slate roof.

6.12 Developmental plan, as available, by the local authorities:

No development plans have been prepared by the local authorities as yet.

6.13 Permissible building related parameters:

6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated Area):

Internal changes and adaptive reuse may be generally permitted. However, external changes shall be subject to detailed scrutiny by the Competent Authority. Such changes which include retrofitting/renovation may be permitted when the building is structurally weak or unsafe or when it has been adversely impacted by any natural calamity and renovation is absolutely necessary. Original building vocabulary and layout along with built-open relationships are to be adhered to. General repair and upkeep of buildings will be permissible, subject to prior permission from the Competent Authority.

The repair and renovation in building/structures should be sympathetic and congruous with the heritage character of the Protected Monument and its surrounding areas. New cladding materials like Aluminum Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), laminates, tiling or glazing to be discouraged. Use of locally available building material should be encouraged in carrying out repair and renovation works.

6.13.2 Reconstruction:

Reconstruction is defined in Section 2(k) of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended. Permission for reconstruction in Regulated Area is accorded as per Section 20 C (2) of the AMASR Act, 1958, as amended and Rule 6(IV) and Rule 7 AMASR (Framing of heritage Bye-Laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. In case of any type of building or structure located in the Prohibited or Regulated area of the Protected Monument or Protected Site, collapsed or damaged and found beyond repair due to natural calamities, the permission for reconstruction is accorded as per Rule 16 AMASR (Framing of heritage Bye-Laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. Reconstruction of building or structure damaged due to natural calamity shall be permissible only to the extent it is damaged. The new structure or building as a replacement to the older building in case of reconstruction shall follow the same horizontal and vertical limits as per the pre-existing structure. The use of incongruous materials in the façade such as glazing, metal cladding, Aluminum Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), tiles, laminates will not be permissible. The new structure should be sympathetic and congruous with the heritage character of the Protected Monuments and its surrounding area.

6.13.3 <u>New Construction</u>:

6.13.3 A Prohibited Area:

As per Section 20A(4) of the AMASR Act, 1958, as amended no new construction including carrying out any public work or project essential to the public or other construction, shall be permitted within the Prohibited Area of the Protected Monument.

6.13.3 B Regulated Area:

Since no land-use plan/ master plan/ zoning regulations have been prepared by the Local Authorities, the height and other building related parameters prescribed in this Heritage Bye-Laws will be applicable for all types of construction in the Regulated Area of the Protected Monument.

In the agricultural fields, constructions that fall under specified exemptions may be permitted. These permissible constructions on the agricultural land include construction of structures for dwellings and ancillary buildings for people engaged in farming or structures for storage of crops, fodder, manure, agricultural tools, and other similar facilities. The development pattern should be primarily low density and low rise.

1. **Height of the new construction on the site (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, HVAC unit, solar panel, rain water harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc.) or any other services on the roof:**

   The maximum height limit for new construction or additions/alteration to existing buildings shall not exceed **7.50 meters** (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, generator room, HVAC unit, solar panel, rainwater harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc.) or any other services on the roof.

   Construction of basement to be discouraged to mitigate any adverse impact on the structural safety of the Protected Monument as far as feasible.

2. **Usage:**

   i. Since there is no defined land-use by the local authorities therefore it is recommended that there be no alterations to the existing land use to preserve the current setting around the Protected Monument.

   ii. In the agriculture land falling in the Regulated Area of the Protected Monument, only agriculture and agro related construction to be permissible.

   iii. The establishment of industries and factories should not be permitted within the Regulated Area.

3. **Façade design:**

   i. Vernacular architecture using traditional locally available building materials may be encouraged.

   ii. The façade design of new construction should be minimalistic in nature, so that it does not overpower the Protected Monument. Intrusive materials like cladding or use of paneling on the exterior façade to be discouraged

   iii. Using prevailing traditional architectural elements and features, such as sloping roofs with slate tiles, tibari wooden railings, ornamentation, and specific door-window styles, etc. are to be encouraged.

   iv. Use of intrusive materials such as Aluminium Composite Panel (ACP), High Pressure Laminates (HPL) and any other synthetic material for exterior finishes on the exterior façade to be discouraged.

   v. Use of coloured glazed façade to be discouraged.

4. **Roof design:**

   i. Traditional sloping roof system with slate tiles may be followed.

   ii. Erection of structures, even of temporary nature, using materials such as aluminium, fiber glass, polycarbonate or similar materials should be discouraged on the roof of the building.

   iii. All services such as large air conditioning units, rooftop water storage tanks or large generator sets placed on the roof to be screened off using screen walls (brick/cements sheets, louvers, jaalis or other such design elements). All of these services should be included in the maximum permissible height.

   iv. The roof(s) of new building should confirm to the characteristics of the roof(s) around them. They should be visually compatible by aligning with the roof shape, orientation, and pitch of surrounding buildings.

5. **Building material:**

   i. Use of vernacular building materials like mud, clay, bamboo, stone, slate tiles, timber, lime plaster and other such materials architecture.

   ii. Consistency in building materials and colour along all street façades of the Protected Monument may be maintained.

   iii. Modern building materials like brick and cement may be used provided they do not disrupt or compromise the heritage character of the Protected Monument and its surrounding areas.

   iv. Materials that complement traditional architecture to be used to maintain the character of the region.

6. **Colour:**

   The exterior colour should be of a neutral tone in harmony with the Protected Monuments such as buff sandstone colour, white, beige and other earthy colours which do not create a harsh contrast with the Protected Monument and its immediate surroundings.

7. **Other Regulations:**

   Proposal for construction of any large-scale public infrastructure project like bridge over river, foot-over bridges, cable car project, Ropeways Terminal Buildings, dams, multi-level parking or any such project shall be subject to a detailed Heritage Impact Assessment report.

6.14 Visitor facilities and amenities:

Visitor facilities and amenities may be considered in the vicinity of the Protected Monument as per feasibility.

CHAPTER VII

Site Specific Recommendations

7.1 Site Specific Recommendations:

i. LED or digital signs, plastic fibre glass, or any other highly reflective synthetic material should not be used for signages in the vicinity of the Protected Monument or its immediate surrounding areas.

ii. No advertisements in the form of hoardings, bill boards, and posters should be permitted near the Protected Monument, especially on the boundaries of the Protected Monument.

iii. Telephone exchange, mobile towers, electricity transmission towers, chimneys, and overhead water tanks within the Regulated Area are to be discouraged.

iv. The natural terrain falling within the Prohibited and Regulated Areas of the Monument should be retained as existing.

v. Use of Eco-Friendly vehicles for movement in the vicinity of the Protected Monument may be encouraged to mitigate adverse impact of vehicular emissions and vibrations on the Protected Monument.

vi. Construction of green buildings, including best practices like rainwater harvesting, etc., to be encouraged.

vii. It is recommended to prepare a visitor management plan by the Local Authorities to balance future development and maintain the integrity of the surroundings of the Protected Monument.

7.2 Other Recommendations:

i. The area should be declared as Plastic and Polythene free zone.

ii. Provisions for differently abled persons to be encouraged as per prescribed standards and feasibility of the site conditions.

iii. National Disaster Management Guidelines for Cultural Heritage Sites and Precincts may be referred at https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf.

अनुलग्नक
ANNEXURES

अनुलग्नक-I
ANNEXURE–I

सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड की सर्वेक्षण योजना

Survey Plan of - A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand

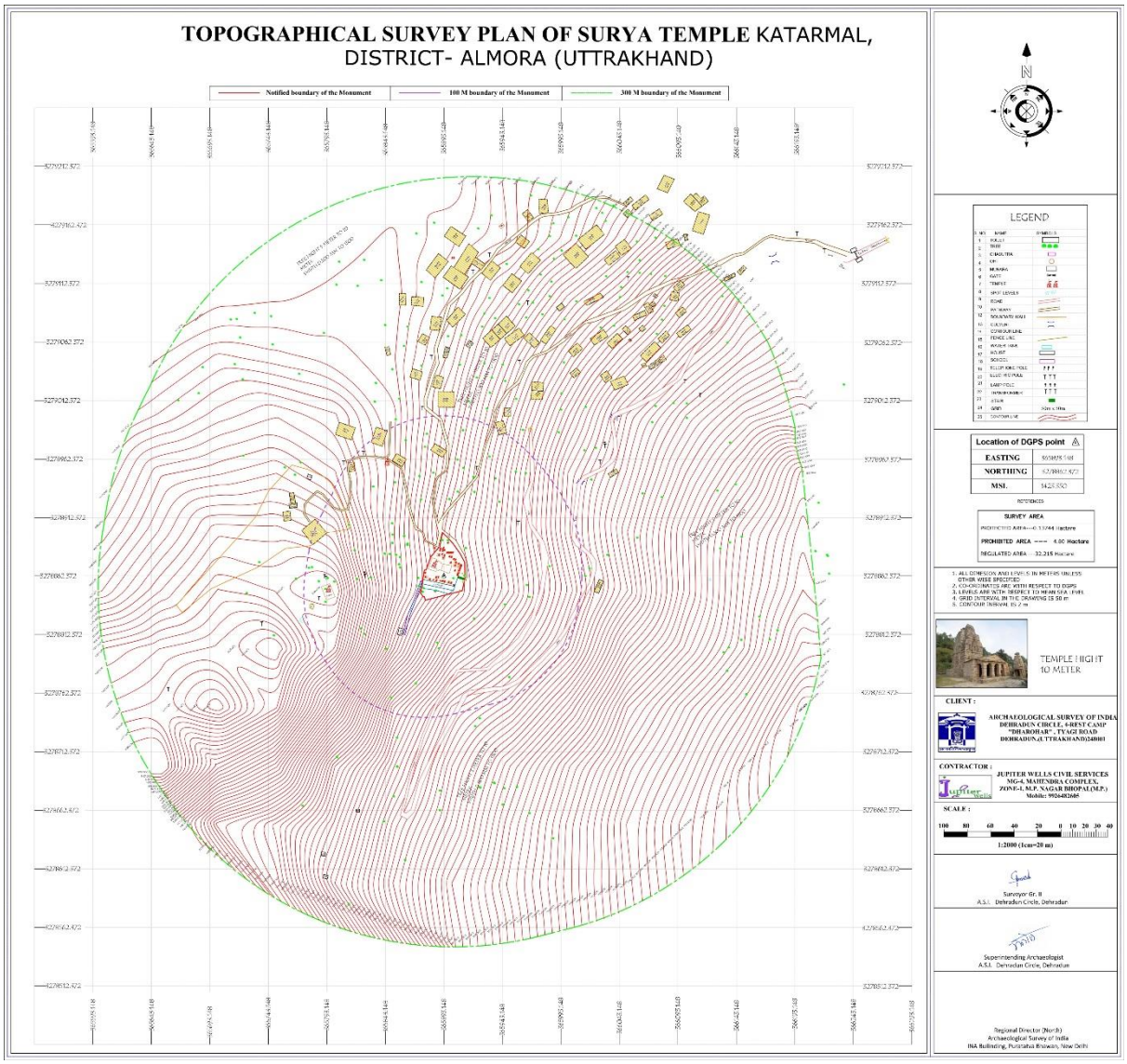

अनुलग्नक-II
ANNEXURE-II

संस्मारक की अधिसूचना
Notification of the Monument

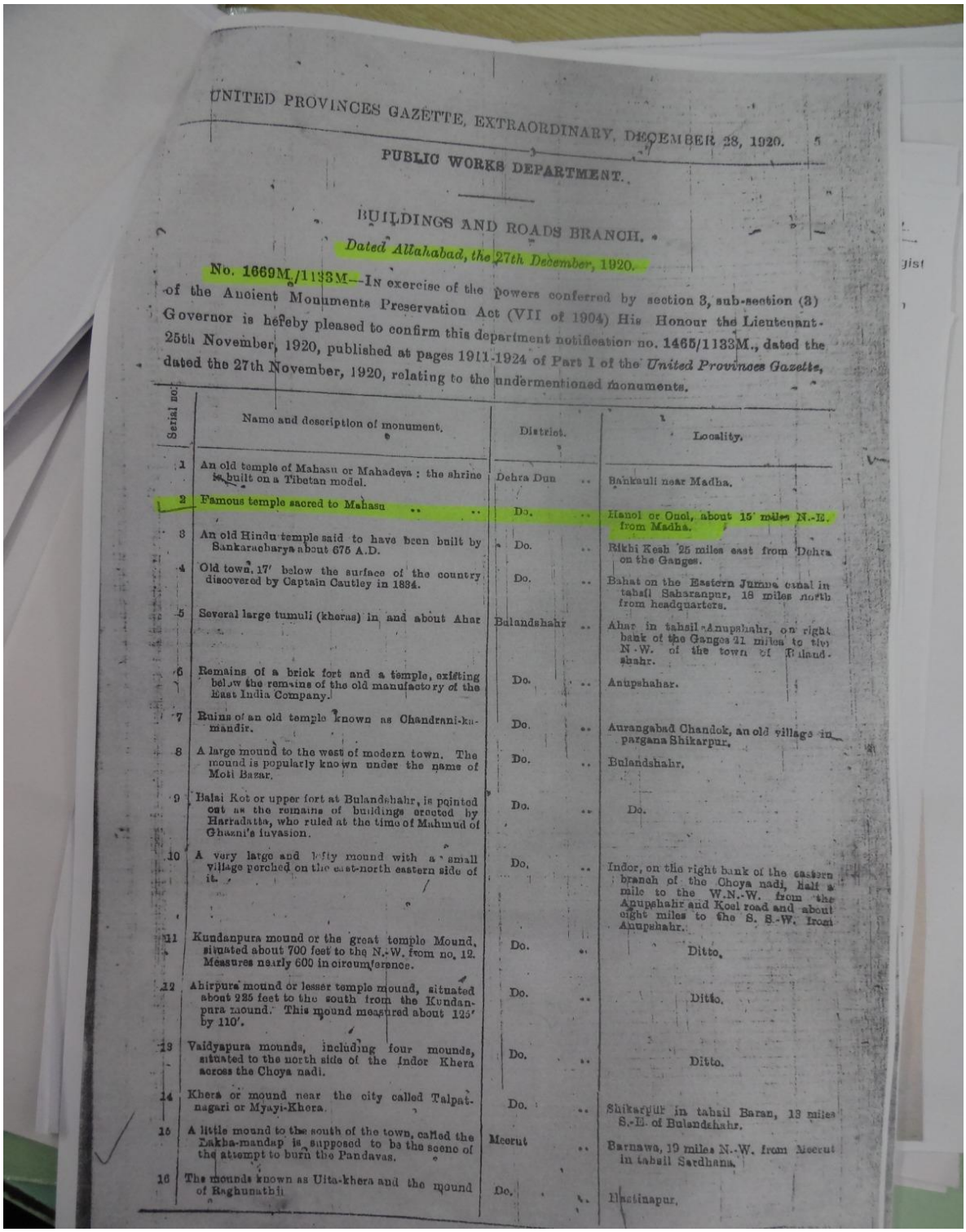

UNITED PROVINCES GAZETTE, EXTRAORDINARY, DECEMBER 28, 1920.

PUBLIC WORKS DEPARTMENT.

BUILDINGS AND ROADS BRANCH.

Dated Allahabad, the 27th December, 1920.

No. 1669M./1133M.—In exercise of the powers conferred by section 3, sub-section (3) of the Ancient Monuments Preservation Act (VII of 1904) His Honour the Lieutenant-Governor is hereby pleased to confirm this department notification no. 1465/1133M., dated the 25th November, 1920, published at pages 1911-1924 of Part I of the *United Provinces Gazette*, dated the 27th November, 1920, relating to the undermentioned monuments.

Serial No.	Name and description of monument.	District.	Locality.
1	An old temple of Mahasu or Mahadeva : the shrine is built on a Tibetan model.	Dehra Dun ..	Bankauli near Madha.
2	Famous temple sacred to Mahasu	Do. ..	Hanol or Onol, about 15 miles N.-E. from Madha.
3	An old Hindu temple said to have been built by Sankaracharya about 675 A.D.	Do. ..	Rikhi Kesh 25 miles east from Dehra on the Ganges.
4	Old town 17' below the surface of the country discovered by Captain Cautley in 1884.	Do. ..	Behat on the Eastern Jumna canal in tahsil Saharanpur, 18 miles north from headquarters.
5	Several large tumuli (kheras) in and about Ahar	Bulandshahr ..	Ahar in tahsil Anupshahr, on right bank of the Ganges 21 miles to the N.-W. of the town of Bulandshahr.
6	Remains of a brick fort and a temple, existing below the remains of the old manufactory of the East India Company.	Do. ..	Anupshahar.
7	Ruins of an old temple known as Chandrani-ka-mandir.	Do. ..	Aurangabad Chandok, an old village in pargana Shikarpur.
8	A large mound to the west of modern town. The mound is popularly known under the name of Moti Bazar.	Do. ..	Bulandshahr.
9	Balai Kot or upper fort at Bulandshahr, is pointed out as the remains of buildings erected by Harradatta, who ruled at the time of Mahmud of Ghazni's invasion.	Do. ..	Do.
10	A very large and lofty mound with a small village perched on the east-north eastern side of it.	Do. ..	Indor, on the right bank of the eastern branch of the Choya nadi, half a mile to the W.N.-W. from the Anupshahr and Koel road and about eight miles to the S. S.-W. from Anupshahr.
11	Kundanpura mound or the great temple Mound, situated about 700 feet to the N.-W. from no. 12. Measures nearly 600 in circumference.	Do. ..	Ditto.
12	Ahirpura mound or lesser temple mound, situated about 225 feet to the south from the Kundanpura mound. This mound measured about 125' by 110'.	Do. ..	Ditto.
13	Vaidyapura mounds, including four mounds, situated to the north side of the Indor Khera across the Choya nadi.	Do. ..	Ditto.
14	Khera or mound near the city called Talpatnagari or Myayi-Khera.	Do. ..	Shikarpur in tahsil Baran, 13 miles S.-E. of Bulandshahr.
15	A little mound to the south of the town, called the Lakha-mandap is supposed to be the scene of the attempt to burn the Pandavas.	Meerut ..	Barnawa, 19 miles N.-W. from Meerut in tahsil Sardhana.
16	The mounds known as Uita-khera and the mound of Raghunathji	Do. ..	Hastinapur.

	Name and description of monument.	District.	Locality.
269	A long low mound of ruins to the south-west of Khakundu.	Gorakhpur ..	Khakhundu, village in pargana Salempur of tahsil Deoriya, 44 miles S.-E. of Gorakhpur.
270	A large mound covered with broken bricks and a few statues to the south of Padrauna. It measures 220′ × 120′ × 14′ (high).	Do. ..	Padrauna or Parauna, tahsil, 49 miles N. N. E. of Gorakhpur.
271	A conical *stupa*-shaped mound	Do. ..	Amaoni, village about 9 miles to the north of Rudrapur.
272	Colossal statue of Vishnu, 11′ in height under a tree to the east of Rudrapur.	Do. ..	Rudrapur, town in pargana Silhat of tahsil Hata, on the eastern bank of Manjue river, 27 miles S.-S.-E. of Gorakhpur.
273	A high square-shaped mound close to the W. of Rudrapur.	Do. ..	Ditto.
274	The extensive mound situated along the ancient tank.	Do.	Sohnag, hamlet in pargana Salempur of tahsil Deoriya, 50 miles S.-E. of Gorakhpur and 3 miles S.-W. of Salempur.
275	A very high *tila* or mound apparently the remains of a Buddhist *stupa*.	Do. ..	Tarakulwa, large village in pargana Shahjahanpur of tahsil Hata, 40 miles S.-S.-E. of Gorakhpur.
276	Sanskrit inscription of a stone sugarcane press, dated Samvat 1609.	Azamgarh ..	Azamgarh
277	A square shaped mound of earth measuring 160′ × 150′.	Do. ..	Chirsiya Kot, village in tahsil Mohammadabad, 16 miles S.-E. of headquarters.
278	An ancient site called Garha-ka-Kot or Rajbhatka-Kot, measuring [illegible]′ × 1500′.	Do. ..	Bhatti, village 6 miles to the N.-W. of Chirsiya Kot.
279	A low mound of brick ruins 170′ × 25′ and called Sivari-ka-tila.	Do. ..	Dabhaon village in tahsil Deogaon, 36 miles S. of Azamgarh.
280	A large Hindu temple sacred to Kali in the old Ranchula fort, and several other old temples of usual style, together with the masonry well containing two stone inscriptions of Udayapaladeva.	Almora ..	Baijnath or Vaidyanatha, village in pargana Danpur of Almora tahsil.
281	Remains of a few old temples and an inscribed masonry well close to the S.-W. of the village.	Do. ..	Gangoli-hat in Chaupawat tahsil.
282	A large temple dedicated to the Sun ..	Do. ..	In Katarmal village pargana Baramandal Almora tahsil.
283	The romantic temple of Devipur, on the banks of the Kosi river on a low range of wooded hills.	Naini Tal ..	Kota, capital of pargana in tahsil Bhabar.
284	Remains of ancient buildings locally identified with Vairata-pattana.	Do. ..	Dhikuli, village in pargana Kota of Tahsil Bhabar.
285	An old temple sacred to Sita	Do. ..	Sitaban, village, 6 miles S.-W. of Kota.
286	Remains of sixteen temples	Garhwal ..	Adbadri, village in pargana Chandpur of tahsil Srinagar.
287	The fort with walls and ruins of dwelling houses inside it, and with flights of steps.	Do. ..	Chandpur Fort in pargana Chandpur.
288	A trident of iron with a shaft, 16′ high with one ancient and three modern inscriptions, situated in the compound of a fine old temple which was repaired by Amar Sinha Tapha.	Do. ..	Gopesvar village in pargana Nagpur.
289	A trident of iron with a shaft of the same material, with an ancient inscription	Do. ..	Barahat.
290	Old mounds of considerable extent covered with bricks.	Lucknow ..	Arjunpur and Rukhara villages in tahsil Malhad.
291	Mounds at each of these villages	Do. ..	Paharnagar Tikuria, Siris, and Nagarm, villages in Mohanlalganj pargana.
292	The mound known as Kalhaur or Kilho ..	Hardoi ..	Bawan pargana.
293	Immense brick-mounds locally called Bhankargarh, near the village of Bibi-Khera and Bharaja-s Karauli.	Do. ..	Gandwa, village in tahsil Sandila.

मूलरूप की टंकित अधिसूचना
Typed Copy of Notification

UNITED PROVINCES GAZETTE, EXTRAORDINARY, DECEMBER 28, 1920.

PUBLIC WORKS DEPARTMENT.

BUILDINGS AND ROADS BRANCH.

Dated Allahabad, the 27th December, 1920.

No. 1669M/1133M-IN exercise of the powers conferred by section 3, sub-section (3) of the Ancient Monuments Preservation Act (VII of 1904). His Honour the Lieutenant. Governor is hereby pleased to confirm this department notification no. 1465/1133M., dated the 25th November, 1920, published at pages 1911-1924 of the Part I of the *United Provinces Gazette*, dated the 27th November, 1920, relating to the undermentioned monuments.

Serial No.	Name and description of Monument	District	Locality
282	A large temple dedicated to the Sun	Almora	In Katarmal village pargana Baramandal Almora tahsil.

अनुलग्नक-III
ANNEXURE–III

सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड का अभिलेखीय सर्वेक्षण योजना

Archival Site Plan of A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand

अनुलग्नक-IV
ANNEXURE–IV

सूर्य को समर्पित एक बृहद मंदिर, कटारमल, जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड का राजस्व मानचित्र
Revenue Map of A large temple dedicated to the Sun, Katarmal, District – Almora, Uttarakhand

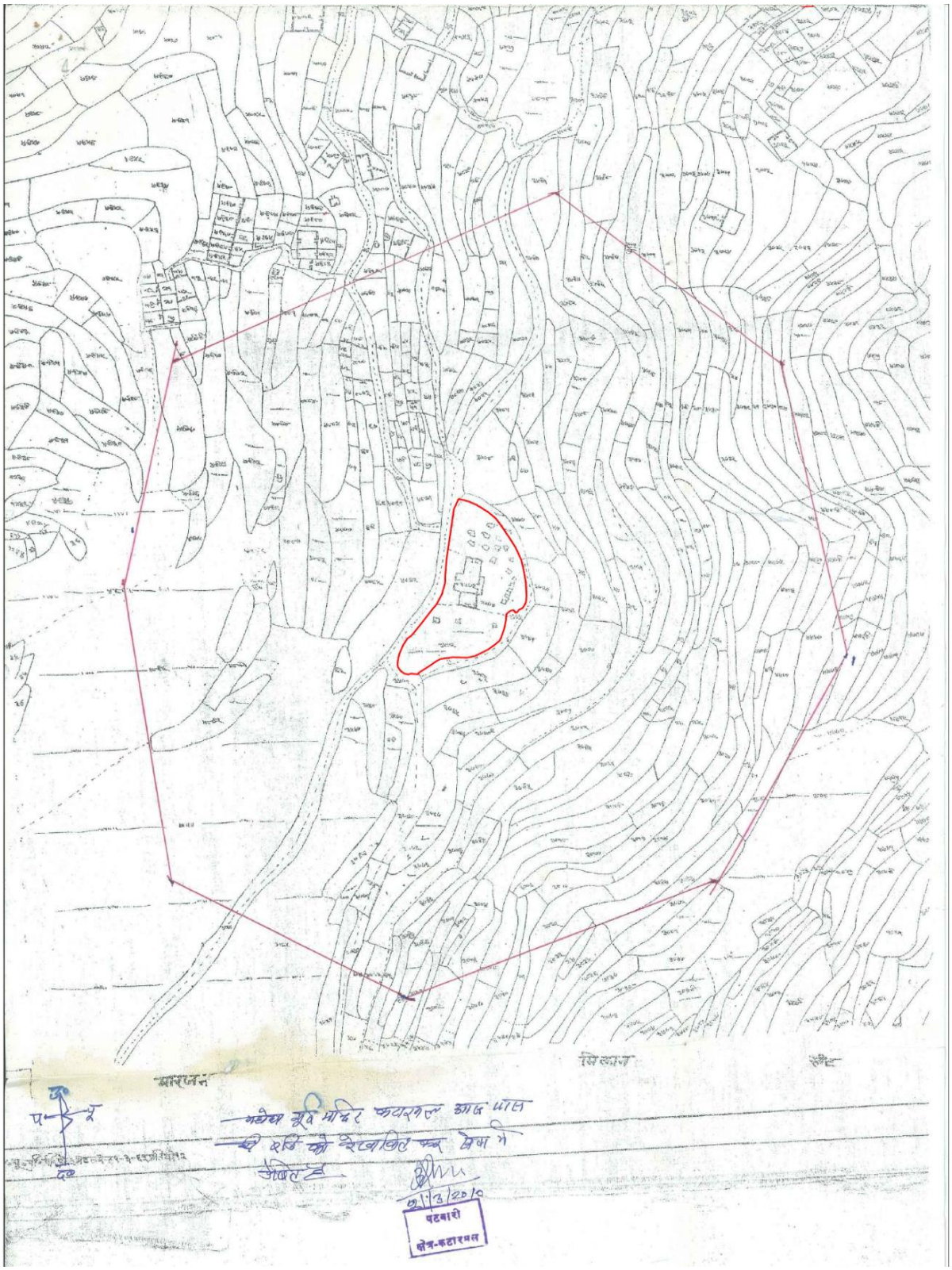

अनुलग्नक-V
ANNEXURE-V

संस्मारक और उसके आसपास के क्षेत्र के चित्र
Images of the Monument and the surrounding area

चित्र 1: परिसर के भीतर मुख्य मंदिर का दृश्य
Image 1: View of the main temple within the complex

चित्र 2: छोटे मंदिरों का दृश्य
Image 2: View of the smaller shrines

चित्र 3: मुख्य मंदिर के पीछे का दृश्य
Image 3: Rear side view of the main temple

चित्र 4: मंदिर की ओर जाने वाले रास्ते का दृश्य
Image 4: View of the pathway leading to the Temple

चित्र 5: स्थल पर उपलब्ध मंदिर परिसर की योजना
Image 5: Plan of the Temple complex available on Site

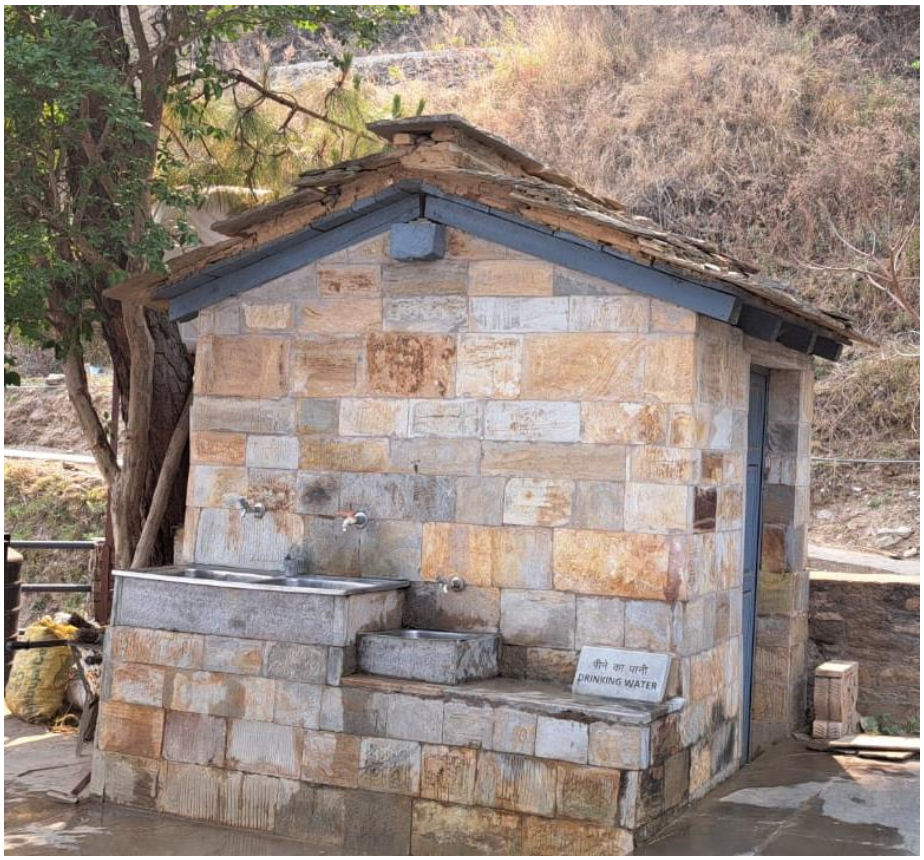

चित्र 6: पेयजल सुविधा
Image 6: Drinking water facility

चित्र 7: शौचालय ब्लॉक
Image 7: Toilet block

चित्र 8 और 9: संस्मारक के विनियमित क्षेत्र के भीतर पारम्परिक मकान
Image 8 and 9: Traditional Houses within the Regulated Area of the monument

चित्र 10: विनियमित क्षेत्र के भीतर नए निर्माण
Image 10: New construction within the Regulated Area

चित्र 11: विनियमित क्षेत्र के उत्तर की ओर का दृश्य
Image 11: North side view of the Regulated Area